प्रातःक्लास 21-4-68 ओमशान्ति अलफ और बे याद है?

****

ओमशान्ति। बच्चे समझते हैं बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बाप भी समझते हैं कि हम इन बच्चों को समझाते हैं। यह भी बच्चों को समझाया गया है भक्ति मार्ग के अनेकानेक चित्र हैं। भिन्न2 नाम से चित्र बना दिये हैं। जैसे बच्चे को नेपाल तरफ भेज देते हैं, वहां मानते हैं पारसनाथ को। उसका बहुत बड़ा मंदिर है वहां। परन्तु है कुछ भी नहीं। चार दरवाज़े हैं। चार मूर्तियां हैं। चौथे में कृष्ण को रखा है। पहले ऐसे था। अभी शायद बदली भी कर लिया हो। वह पारसनाथ किसको कहते हैं। जरूर शिव बाबा को ही कहेंगे। मनुष्यों को पारस बुधि भी वही बनाते हैं। चित्र वहां भी तो अनेक देखेंगे। पहले2 उन्हों को यह समझाना है ऊंच ते ऊंच है भगवान। पीछे है यह सारी दुनिया। सूक्ष्मवतन की तो सृष्टि है नहीं। पहले2 ऊंच ते ऊंच है भगवान। पीछे होते हैं ल०ना० वा विष्णु। वास्तव में विष्णु का मंदिर भी रांग है। विष्णु चतुर्भुज, चार भुजा वाला कोई मनुष्य होता नहीं। बाप समझाते हैं यह ल०ना० हैं जिनको ही इकट्ठा विष्णु का रूप दिखाया है। ल०ना० तो दोनो ही अलग2 हैं। इस सृष्टि में चार भुजा वाला कोई मनुष्य होता नहीं। सूक्ष्मवतन में विष्णु को चार भुजाएं दी है। अर्थात दो को मिला कर चतुर्भुज कर दिया है। बाकी ऐसा कोई होता नहीं हैं। मंदिर में जो चतुर्भुज दिखाते हैं वह है ही सूक्ष्मवतन का। यहां तो होता ही नहीं। चतुर्भुज को शंख, चक्र, गदा ·· आद दिये हैं। ऐसे तो कुछ भी है नहीं। चक्र भी तो तुम बच्चों को है। नेपाल में विष्णु का बहुत बड़ा चित्र है, क्षीरसागर में दिखाते हैं। पानी में थोड़ा दूध डाल देते हैं* पूजा के दिनों में। वास्तवमें चतुर्भुज की पूजा कैसे होगी। इतना लम्बा तो कोई मनुष्य होता नहीं। कई बच्चे लिखते हैं बाबा सूक्ष्मवतन को भी उड़ा देते हैं, और यह तो समझाने की बात है। चार भुजा वाला मनुष्य होता थोड़े ही है। यह ल०ना० को मिला कर चतुर्भुज दिखाया है। वास्तवमें मिलते भी नहीं हैं। ल०मी का जन्म अलग, नारायण का जन्म अलग। राधे का अलग, कृष्ण का अलग। मां-बाप दोनो के अलग2। दोनो इकट्ठे फिर कैसे हो सकते हैं। यह भी बुधि में आना चाहिए ना। पुरुष बड़ा होता है, स्त्री छोटी आयु की होती है। इसलिए चतुर्भुज तो कोई चीज़ ही नही रही। दिखाते हैं जो जरूर है कहेंगे। परन्तु बाप समझाते हैं यह भक्ति मार्ग के शास्त्रचित्र आद जो भी हैं इनको भी छोड़ देना चाहिए। अभी भक्ति मार्ग पूरा होता है। वह सभी बात भूल जाओ। अभी तो तुमको वापस जाना है* घर। इन्हों का नाम ही है ल०ना०। बाकी पारस पुरी है। पारसपुरी को गोल्डेन एज कहा जाता है। एक एक बात क्लीयर की जाती है। जैसे बाप समझाते हैं ऐसे कोई भी विष्णु का अर्थ समझा न सके। जानते ही नहीं हैं। यह तो भगवान खुद समझाते हैं। भगवान कहा जाता है शिव बाबा को। है तो एक ही। एक का नाम भक्ति मार्ग में अनेक रख दिये हैं। तुम अभी अनेक नाम नहीं लेंगे। भक्ति मार्ग में तो बहुत धक्के खाते हैं। तुमने भी खाई है। तो अभी वहां के मंदिर को देखना है फिर उस पर समझाना है कि ऊंच ते ऊंच भगवान है। सुप्रीम सोल निराकार परम पिता परमात्मा। उनकी फिर महिमा भी है। ज्ञान का सागर है, सुख का सागर है। यह तो पहले2 समझाना है। भक्ति मार्ग में अनेक चित्र हैं। ज्ञान मार्ग में तो ज्ञान सागर एक ही है। वही पतित-पावन सर्व की सदगति दाता है। तुम्हारे बुधि में सारा चक्र हैं। ऊंच ते ऊंच भगवान। उनके लिए ही गायन है सिमर2 सुख पाओ··· सिर्फ एक बाप को याद करो। अर्थात सिमरण करते रहो। सिमर2 सुख पाओ, कल-कलेश मिटे सब तन के, जीवन मुक्ति पद पाओ। यह जीवनमुक्ति है ना। बाप से ही यह वर्सा मिलता है। अकेले सिर्फ यह तो नहीं पावेंगे। जरूर राजधानी होगी ना। गोया बाप राजधानी स्थापन कर रहे हैं। सतयुग में राजा-रानी प्रजासभी होते हैं। तुम ज्ञान प्राप्त करते जाते हो तो जाकर बड़े कुल में जन्म लेंगे। बहुत ही सुख मिलते हैं। ताकि फिर वह स्थापना हो जाती है। छी छी वापस चले जाते हैं। अपने2 सेक्शन में जाकर ठिकाने लेंगे। इतने सभी आत्मारूपी एक्टर्स हैं जो फिर नम्बरवार पार्ट बजाने आती हैं। सतयुग में तो बहुत थोड़े2 ही आवेंगे। फिर बुधि को पाते रहेंगे। पहले 4-5 फिर 50-100लाख* भी आ जावेंगे। यह भी बुधि में आना चाहिए। ऊपर से कैसे आते हैं। ऐसे तो नहीं दे

के बदली दस पत्ते इकट्ठे निकल आवेंगे। कायदे सिरे पत्ते निकलते हैं ना। यह तो बहुत बड़ा झाड़ है। दिखाते हैं एक दिन में लाखों की बृधिहो जाती हैं। पहले तो समझाना है ऊंच ते ऊंच भगवान, पतित-पावन, दुःख हर्ता सुख कर्ता भी वही हैं। जो भी पाटधार दुःखी होते हैं सभी को सुख देने वाला वह एक ही हैं। और सभी को दुःख देने वाला फिर है रावण। मनुष्यों को यह पता नहीं हैं कि बाप आये हैं। जब कि आकर समझे। कई तो समझते2 भी थिरक जाते हैं। जैसे स्नान करते2 पानी के अन्दर घूस जाते हैं ना। बाबा तो अनुभवी है। (मिशाल) तालाब था। फिर बाप ने झट निकाल दिया। नहीं तो डूब जाता था। परन्तु ड्रामा में नहीं था। यह भी विषय सागर है। बाप क्षीर सागर तरफ ले जाते हैं। परन्तु माया रूपी ग्राह अच्छे2 महारथियों को भी हप कर लेती है। जीते जी बाप के गोद से मर कर रावण के गोद में चले जाते हैं। एकदम गठर में जाकर पड़ते हैं। मर पड़ते हैं। तो तुम बच्चों की बुधि में है ऊंच ते ऊंच बाप फिर यहरचना रचते हैं। हिस्ट्री-जागराफी सूक्ष्मवतन का तो है नहीं। यह सूक्ष्मवतन आद सभी है भक्ति मार्ग में। ज्ञान मार्ग में कुछ नहीं। भल तुम सूक्ष्मवतन में जाते हो सा0 करते हो, वहां चतुर्भुज देखते हो? (पहले देखा था) चित्रों में है ना तो तो वह बुधि में बैठा हुआ है। तो जरूर सा0 होगा। परन्तु ऐसी कोई चीज़ है नहीं। यह भी भक्ति मार्ग के चित्र हैं। अभी तक भक्ति मार्ग चल रहा है। भक्ति मार्ग पूरा होगा तो फिर यह चित्र रहेंगे नहीं। स्वर्ग में यह सभी बातें भूल जाते हैं। यह ल0ना0 है उनको मिला कर विष्णु रखे तो भी बुधि में ज्ञान है कि यह ल0ना0 के दो रूप हैं। चतुर्भुज की पूजा सो ल0ना0 की पूजा। चतुर्भुज का मंदिर या ल0ना0 का मंदिर बात एक ही हैं। इन दोनो का ज्ञान और किसको है नहीं। तुम जानते हो इन ल0ना0 का राज्य है। विष्णु का राज्य तो नहीं कहेंगे। यह पालना भी तो करते हैं ना। बाबा ने नेपाल में एक बारी मंदिर देखा था। कितने बर्ष हो गये। आजकल तो बहुत ही चेंज भी करते रहते हैं। हम गये भी दूपहर के टाईम थे। मंदिर तो बन्द था। हमारे साथ सिपाही था। उस ने जाकर कहा बड़ा जवाहरी गेस्ट आया है। महाराजाके गेस्ट हैं। तो उसने भी समझा कुछ मिलेगा भी। फिर पहले एक दरवाजा खोला हम अन्दर दर्शन कर एक गिन्नी रखी। बोला अभी बार दरवाजे हैं। समझा चार गिन्नी मिल जावेंगा। फिर सभी दिखाई। अभीवह हैवा नहीं कहनहीं सकते हैं। 40 बर्ष में बम्बई देहली देखो क्या हो गया है। नेपाल भी बदल गया होगा। उससमय किंग किले अन्दर रहता था। कोईसे मिलता नहीं था। उनके ब्रादरीउनके कमान्डर थे। राज्य उनका था। आमदनी बांट कर लेते थे। सभी को वेतन मिलता था। तो वहां भी अच्छे2 हैं जो इनको मान देंगे। टापिक्स यहां से ही बनाकर ले जावे। शिव भगवानुवाच। वहां शिव को तो सभी मानते हैं। शिव भगवानुवाच मैंतुमकोराजयोग सिखाता हूं। अपन को आत्मा समझ मुझे मुझे याद करो तो इस योग अग्नि से विकर्म विनाश हो। डिटेल में समझाना पड़े। बोलो यह भी है गीता। सिर्फ गीता मेंकृष्ण का नाम डाल दिया हैं। कृष्ण भगवानुवाच तो है नहीं। भगवान है एक। मनुष्य तो 24 अवतार कहें देते हैं। फिर कुत्ते बिल्ले कण2 में परमात्मा है। यह है बड़ी ते बड़ी ग्लानी। अपने ही लिए 84 लाख जन्म कहते हैं। और मेरे लिए अनगिलत कह देते हैं। यहतो गलत है। सभी कीग्लानी कर दी है। इसलिए भारतवासी तमोप्रधान बन पड़े हैं। अभी हैकलियुग सृष्टि का भी अन्त। इनको कहा जाता है तमोप्रधान। आयरन एज। जो सतोप्रधान थे उन्हो ने ही 84 जन्म लिये हैं। जन्म-मरण में तो जरूर आना है। जब पूरे 84 जन्म लेते हैं तब फिर बाप को आना पड़ता है। फिर पहले नम्बर में। एक की बात नहीं। इनकी तो सारी राजधानी थी ना। फिर जरूर होनी चाहिए। बाप सभी के लिए कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो योग अग्नि से पाप कट जावेंगे। काम चिक्षा पर बैठ सभी काले होगये हैं। फिर सांवरा से गोरा कैसे बने सो बाप बैठ सिखलाते हैं। कृष्ण की आत्मा जरूर भिन्न2 नाम रूप लेकर आई होंगी। जो ल0ना0 थे वही 84 जन्मों के बाद फिर वह बनता है। तो उनके हीबहुत जन्मों के अन्त में बाप प्रवेश करते हैं। फिर वह सतोप्रधान विश्व के मालिक बनते हैं।

तुम्हारे में पारसनाथ को पूजते हैं। शिव को पूजते हैं। जरूर इन्हों को शिव ने ही ऐसा बनाया होगा ना। टीचर तो चाहिए ना। वह है ज्ञान का सागर। अभी सतोप्रधान पारसनाथ बनना है। तो बाप को बहुत प्यार से याद करो। वही सभी के दुःख हरने वाला है। यह है कांटों का जंगल। बाप आये हैं फूलों की बगीचा बनाने। बाप अपना परिचय देते हैं मैंसाधारण बूढ़े तन में प्रवेश करता हूं। जो अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। भगवानुवाच मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखाता हूं। तो यह ईश्वरीय युनिवर्सिटी ठहरी ना। एमआबजेक्ट है ही राजा रानी बनने का। तो जरूर प्रजा भी बनेंगी ना। मनुष्य योग2 बहुत करते आते हैं। परन्तु समझते नहीं हैं। निवृति मार्ग वाले तो अनेक हठयोग आद करते हैं। वह राजयोग सीखा नहीं सकते। बाप का है ही एक प्रकार का योग। सिर्फ कहते हैं अपन को आत्मा समझो मुझ बाप को याद करो। 84 जन्म पूरे हुये अभी वापस घर जाना है। अभी पावन बनना है। बाप को याद करो। और सभी को छोड़ दो। भक्ति मार्ग में तुम बाते थे कि आप आवेंगे तो एक आप के संग जोड़ेंगे। तो जरूर उस से वर्सा मिला था ना। अभी है भक्ति मार्ग मूर्दा बाद ज्ञान मार्ग जिन्दा बाद होता है। आधा कल्प स्वर्ग फिर है नर्क। रावण राज्य शुरू होता है। ऐसे2 समझाना चाहिए। अपन को देह न समझो। आत्माअविनाशी है। आत्मा में ही सारा पार्ट नूंधा हुआ है। जो तुम ब्रा बजाते हैं। अभी शिव बाबा को याद करो तोबेरापार हो जावेंगा। वहां बहुत इन सेमिलेंगे भी। सभी के एड्रेस ले जावेंगे। सभी को मान भी देना है। सन्यासी पवित्र बनते हैं तो कितना उनका मान होता है। सभी माथा झुकाते हैं। पवित्रता की बाज पर ही ऊंच नीच है। देवतारं हैं बिलकुल ऊंच। सन्यासी फिर भी एक जन्म पवित्र बनते हैं फिर दूसरा जन्म तो विकार से ही लेते हैं ना। देवतारं होते ही हैं सतयुग में। अभी तुम पढ़ते भी हो सर्विस भी करते हो। कोई पढ़ते हैं करते नहीं हैं। अर्थात दूसरोंको समझा नहीं सकते हैं। क्योंकि धारणा नहीं होती है। बाप कहते हैं तुम्हारे तकदीर में ही नहीं हैं। तो बाप क्या कर सकते हैं। बाप सभी को बैठ आर्शीबाद करे तो सभी स्कालरशिप ले लेवें। वह तो भक्ति मार्ग में आर्शीबाद करते हैं। हेड आई विन...

भूरी पड़ी तो हमने जीता। अक्षर पड़ा तो तुम ने हारा। हराया। सन्यासियों का है यह हाल। उनको जाकर कहेंगे मुझे बच्चा चाहिए आर्शीबाद करो। अच्छा तुमको बच्चा होगा। बच्ची हुई तो तो कहेंगे भावी। बाबा ने गुरु तो बहुत किये हैं ना। बच्चा हुआ तो वाह2 करेंगे। चरणों पर गिरते रहेंगे। अच्छा फिर बच्चा बिमार हुआ, गुरुजी बच्चा बिमार हो पड़ा है। हां दवाई करो यह को ठीक हो जावेगा। बच्चा मर गया बस। रोने पीटने और और गुरु को गाली देने लग पड़े। अरे यह तो भावी थी। कहेंगे पहले क्यों नहीं कहते थे ऐसी भावी थी। कोई मरे हुये से जिन्दा हो जाते हैं वह भी ड्रामा में नूंध होंगी। आत्मा कहां भी छीप जाती है। तो पड़े रहते हैं। डाक्टरलोग भी समझते हैं यह मरा पड़ा है। फिर जिन्दा हो जाते हैं। चिक्षा पर चढ़े हुये भी जिन्दा हो जाते हैं। कोई साधू को ऐक ने मानातो बस उनके पीछे ढेरपड़ जाते हैं। तो बहुत ही निर्माण चित हो चलना है। अहंकार न रहे। आजकल कोई कोअहंकार दिखा या तोदुश्मनी हो जाती है। बहुत ही मीठा होकर चलना है। नेपाल में भी आवाज निकलेगा। कोई बड़े आदमी से आवाज़ पिछाड़ी में निकलेगा। अभी तुम बच्चों की महिमा का का समय नहीं है। नहीं तो उन्हों का घमंड ही उड़ जाये। बड़े आदमी जाग जाये और सभा में बैठ सुनावे तो उनके पिछाड़ी बहुत ही ढेर आ जाये। कोई भी एम0पी0 आद बैठ तुम्हारी महिमा करे कि भारत का राजयोग इन ब्रह्माकुमारियों के सिवाय कोई सिखाये नहीं सकते। ऐसा कोई अभी निकला नहीं है। अभी समय न नहीं हैं। बच्चों को बहुत ही होशियार चमत्कारी बनना है। फलाने2 भाषण कैसे करते हैं सुन कर सीखना चाहिए।

****

सर्विस करने की भी युक्तियां बाबा बतलाते हैं। बाबाने जो मुरली चलाई एक्युरेट, कल्प2 ऐसे चलाई थी। ड्रामा में नूंध है। प्रश्न नहीं उठ सकता। ऐसे क्यों... ड्रामा अनुसार जोसमझाना था वहसमझाया। समझाता रहता। बाकी जटेलोग तो बहुत प्रश्न करेंगे। बोलो पहले मन्मनाभव हो। बाप को जानने से तुम सब कुछ जान जाओगे। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग। नमस्ते।